

Jordanian king's three-day visit from today; key MoUs on anvil

Indo-Asian News Service

• letters@hindustantimes.com

NEW DELHI: King of Jordan Abdullah II bin Al-Hussein, accompanied by a business delegation, will arrive on a three-day visit to India starting on Tuesday, the ministry of external affairs (MEA) announced on Monday.

This will be his second visit to India after his visit along with Queen Rania in 2006.

According to the MEA statement, King Abdullah will hold talks with Prime Minister Narendra during the course of which, the two sides will discuss the entire gamut of bilateral relations as well as regional and international issues of mutual interest.

The two sides are expected to sign a number of memorandums



▪ Abdullah II bin Al-Hussein

of understanding (MoUs) and agreements in diverse areas of bilateral cooperation.

President Ram Nath Kovind will host a banquet in honour of King Abdullah while vice-president M Venkaiah Naidu and external affairs minister Sushma

Swaraj will call on the visiting dignitary.

On Wednesday, the King will visit IIT Delhi to explore collaboration with Jordan technical institutes.

During the day, the King will also participate in a CEO roundtable followed by India-Jordan Business Forum jointly organised by industry bodies FICCI, CII and Assocham.

India-Jordan trade stood at \$1.35 billion in 2016-17, according to figures provided by the external affairs ministry.

On Thursday, the King will deliver a special address on Promoting Understanding and Moderation, organised by the India Islamic Centre at Vigyan Bhawan. Earlier this month, King Abdullah hosted Modi at his residence in Amman.

काम का बोझ

एसोचैम हेल्थकेयर कमिटी की रिपोर्ट में खुलासा, डायबीटीज, हाई बीपी जैसी बीमारियों की तादाद बढ़ी

'6 घंटे की नींद भी नहीं ले पाते कॉरपोरेट सेक्टर के कर्मी'

■ आईएनएस, नई दिल्ली

भारत में करीब 56 फीसदी कॉरपोरेट कर्मचारी दिन में 6 घंटों से भी कम की नींद लेते हैं, क्योंकि उनके एंप्लॉयर की ओर से दिए गए टारगेट का बोझ इतना ज्यादा होता है कि वे हर समय बेहद तनाव में रहते हैं। इसका सीधा असर उनकी नींद पर पड़ता है। एसोचैम हेल्थकेयर समिति की रिपोर्ट में सोमवार को यह जानकारी दी गई।

रिपोर्ट में कहा गया है कि एंप्लॉयर की ओर से अनुचित और अवास्तविक लक्ष्य देने के कारण कर्मचारियों की नींद उड़ रही है, जिससे उन्हें दिन में थकान, शारीरिक परेशानी, मनोवैज्ञानिक तनाव, प्रदर्शन में गिरावट और शरीर में दर्द जैसी परेशानियां होती हैं और इसके कारण वे जरूरत से ज्यादा छुट्टियां लेते हैं।

इस रिपोर्ट में कहा गया है कि नींद में कमी की सालाना लागत 150 अरब डॉलर है, क्योंकि इससे ऑफिस में काम करने की क्षमता घट जाती है। काम का दबाव, सहकर्मियों का



दबाव और सख्त बॉस, ये सभी मिलकर लोगों के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को बिगाड़ रहे हैं।

रिपोर्ट में आगे कहा गया है कि भारत में वर्कफोर्स का करीब 46 फीसदी हिस्सा तनाव से जूझ रहा है। यह तनाव निजी कारणों, कार्यालय की राजनीति या काम के बोझ के कारण है। यही नहीं मेटाबोलिक सिंड्रोम के मामले भी बढ़ रहे हैं, जिसमें डायबीटीज, बढ़ा हुआ यूरिक एसिड, उच्च रक्त चाप, मोटापा और उच्च कॉलेस्ट्रॉल शामिल हैं।

मोटापे, अवसाद की भरमार

रिपोर्ट के मुताबिक, सर्वेक्षण में शामिल 16 फीसदी लोग मोटापे से पीड़ित थे और 11 फीसदी लोग अवसाद से पीड़ित थे। रिपोर्ट के मुताबिक, उच्च रक्तचाप और मधुमेह से पीड़ित लोगों की संख्या क्रमशः 9 फीसदी और 8 फीसदी है। रिपोर्ट में कहा गया कि स्पाइडलॉसिस (5 फीसदी), हृदय रोग (4 फीसदी), सर्वाइकल (3 फीसदी), अस्थमा (2.5 फीसदी), स्लिप डिस्क (2 फीसदी) और अर्थराइटिस (1 फीसदी) जैसी बीमारियां कॉरपोरेट कर्मचारियों में आम हैं। अवसाद, थकान, और नींद विकार ऐसी स्थितियां हैं, जो उत्पादकता पर प्रभाव डालती हैं।

काम के बोझ ने उड़ाई कर्मचारियों की नींद

छह घंटे से भी कम सो पाते हैं कारपोरेट जगत से जुड़े के कर्मचारी

■ नई दिल्ली (आईएनएस)।

भारत में करीब 56 फीसद कारपोरेट कर्मचारी दिन में 6 घंटों से भी कम की नींद लेते हैं, क्योंकि उनके नियोजता द्वारा दिए गए लक्ष्य के बोझ से उन्हें उच्च स्तर का तनाव हो जाता है, जिसका असर उनकी नींद पर पड़ता है। एसोचैम हेल्थकेयर समिति की रिपोर्ट में सोमवार को यह जानकारी दी गई।

रिपोर्ट में कहा गया, 'नियोक्ता द्वारा अनुचित और अवास्तविक लक्ष्य देने के कारण कर्मचारियों की नींद उड़ रही है, जिससे उन्हें दिन में थकान, शारीरिक परेशानी, मनोवैज्ञानिक तनाव, प्रदर्शन में गिरावट और शरीर में दर्द जैसी परेशानियां होती हैं और इसके कारण वे जरूरत से ज्यादा छुट्टियां लेते हैं।' इस रिपोर्ट में कहा गया है कि नींद में कमी की सालाना लागत 150 अरब डालर है, क्योंकि इससे कार्यस्थल पर उत्पादकता घट जाती है। काम का दबाव, सहकर्मियों का दबाव और बास का व्यवहार ये सभी चीजें मिलकर लोगों के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को बिगाड़ रही हैं।

एसोचैम की रिपोर्ट

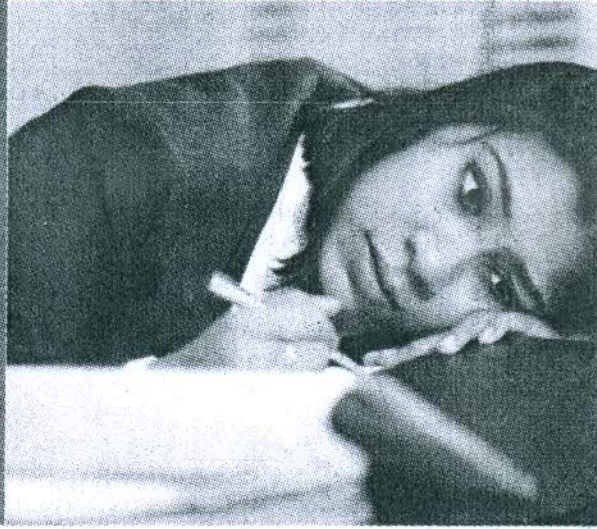


- कर्मचारियों के स्वास्थ्य पर भी पड़ रहा है इसका असर
- इस वजह से मजबूरी में छुट्टियां लेते हैं कई कर्मचारी
- इससे कारपोरेट जगत में उत्पादकता में आती है कमी
- सहकर्मियों के दबाव और बास का व्यवहार भी डालता है असर
- कंपनी क्षेत्र को होता है 150 अरब डालर का नुकसान
- डिप्रेसन और शुगर का शिकार हो जाते हैं कर्मचारी
- तनाव से जूझ रहा है भारतीय कार्यबल का 46 फीसद हिस्सा

रिपोर्ट में आगे कहा गया कि भारतीय कार्यबल का करीब 46 फीसद हिस्सा तनाव से जूझ रहा है। यह तनाव निजी कार्यों, कार्यालय की राजनीति या काम के बोझ के कारण है। रिपोर्ट में कहा गया, 'यहां मेटाबोलिक सिंड्रोम के मामले बढ़ रहे हैं, जिसमें मधुमेह, उच्च यूरिक एसिड, उच्च रक्त चाप, मोटापा, और उच्च कोलेस्ट्रॉल शामिल है।' रिपोर्ट के मुताबिक, सर्वेक्षण में शामिल 16 फीसद लोग मोटापा से पीड़ित थे तथा 11 फीसद लोग अवसाद से पीड़ित थे। रिपोर्ट के मुताबिक, उच्च रक्तचाप और मधुमेह से पीड़ित लोगों की संख्या क्रमशः 9 फीसदी और 8 फीसद है।

रिपोर्ट में कहा गया कि स्पाइलोलोसिस से 5 फीसद, हृदय रोग से 4 फीसद, सर्वाइकल से 3 फीसद, अस्थिमा से 2.5 फीसद, स्लिप डिस्क 2 फीसद और आर्थराइटिस से 1 फीसदी कर्मचारी पीड़ित हैं। रिपोर्ट में बताया गया, 'अवसाद, थकान, और नींद विकार ऐसी स्थितियां या जोखिम हैं, जो अक्सर पुरानी बीमारियों से जुड़ी होती हैं और उत्पादकता पर सबसे बड़ा प्रभाव डालती हैं।'

काम के बोझ से परेशान कर्मचारी



नई दिल्ली, 26 फरवरी (एजेंसियां)। भारत में करीब 56 फीसदी कॉर्पोरेट कर्मचारी दिन में 6 घंटों से भी कम की नींद लेते हैं, क्योंकि उनके नियोक्ता द्वारा दिया गया लक्ष्य के बोझ से उन्हें उच्च स्तर का तनाव हो जाता है, जिसका असर उनकी नींद पर पड़ता। एसोचैम हेल्थकेयर समिति की रिपोर्ट में सोमवार को यह जानकारी दी गई।

रिपोर्ट में कहा गया, नियोक्ता द्वारा अनुचित और अवास्तविक लक्ष्य देने के कारण कर्मचारियों की नींद उड़ रही है, जिससे उन्हें दिन में थकान, शारीरिक परेशानी, मनोवैज्ञानिक तनाव, प्रदर्शन में गिरावट और शरीर में दर्द जैसी परेशानियां होती हैं और इसके कारण वे जरूरत से ज्यादा छुट्टियां लेते हैं। इस रिपोर्ट में कहा गया है कि नींद में कमी की सालाना

6 घंटे से भी कम सो पाते हैं 56 फीसदी कॉर्पोरेट कर्मी

लागत 150 अरब डॉलर है, क्योंकि इससे कार्यस्थल पर उत्पादकता घट जाती है। काम का दबाव, सहकर्मियों का दबाव और कठिन बॉस, ये सभी मिलकर लोगों के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को बिगाड़ रहे हैं। रिपोर्ट में आगे कहा गया कि भारतीय कार्यबल का करीब 46 फीसदी हिस्सा तनाव से जूझ रहा है। यह तनाव निजी कारणों, कार्यालय की राजनीति या काम के बोझ के कारण है। रिपोर्ट में कहा गया, यहां मेटाबोलिक सिंड्रोम के मामले बढ़ रहे हैं, जिसमें मधुमेह, उच्च यूरिक एसिड, उच्च रक्त चाप, मोटापा,

और उच्च कोलेस्ट्रॉल (भारत में) शामिल है। रिपोर्ट के मुताबिक, सर्वेक्षण में शामिल 16 फीसदी लोग मोटापा से पीड़ित थे तथा 11 फीसदी लोग अवसाद से पीड़ित थे। रिपोर्ट के मुताबिक, उच्च रक्तचाप और मधुमेह से पीड़ित लोगों की संख्या क्रमशः 9 फीसदी और 8 फीसदी है। रिपोर्ट में कहा गया कि स्पाइडिलोसिस (5 फीसदी), हृदय रोग (4 फीसदी), सर्वािकल (3 फीसदी), अस्थमा (2.5 फीसदी), स्लिप डिस्क (2 फीसदी) और अर्थराइटिस (1 फीसदी) जैसी बीमारियों कॉर्पोरेट कर्मचारियों में आम है। रिपोर्ट में बताया गया, अवसाद, थकान, और नींद विकार ऐसी स्थितियां या जोखिम हैं, जो अक्सर पुरानी बीमारियों से जुड़ी होती हैं और उत्पादकता पर सबसे बड़ा प्रभाव डालती है।